* श्रीः *

कटे मूड़ की दो दो बातें

वा

तिलस्मी सीसमहल।

* उपन्यास *

श्रीकिशोरीलालगोस्वामि-लिखित।

" चढ़ा मंसूर सूलीपर, पुकारा इश्कबाज़ों को।
यह उसके बाम का ज़ीना है, आए जिसका जी चाहे॥"
(मक़सूद)

श्रीछबीलेलालगोस्वामि-द्वारा
स्वकीय—श्रीसुदर्शन प्रेस, वृन्दावन में
मुद्रित और प्रकाशित.

सन् १९१४ ईस्वी.

दूसरी बार १०००] * [मूल्य छः आने ।